सं. भो.वि./जी.जी.एन./24-84/17723.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० (1) नियंत्रक, हरियाणा राज्य परिवहन, चण्डीगढ़, (2) महा प्रवन्धक हरियाणा राज्य परिवहन, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री मोती राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिग्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इस लिये, प्रब, भौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए प्रधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियाम की धारा 7 के घंधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री मोती राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भ्रो. वि./रोहतक/228-83/17731 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै॰ प्रशासक नगर पालिका रोहतक, के श्रमिक श्री ग्रयाम सुन्दर तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनयम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई अक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रिधसूचना सं. 3864-ए.एस.श्रो (ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिधिनयम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनण्य हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री श्याम सुन्दर की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भ्रो.वि /हिसार/141-83/18032.—-चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि जनरल मैनेजर, हरियाणा रोड़वेज, सिरसा, के श्रमिक श्री बृज मोहन तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद खिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यताल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, ओद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-अम-70/32573, दिनांक 6 ववन्दर, 1970 के सम्य पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ओ. (ई) अम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णव हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री वृज मोहन की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? तो वह किस राहत का हकदार है ? दिनांक 10 मई, 1984

सं. म्रो.वि./हिसार/120-83/18249.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. न्नांच मैंनेजर, हरियाणा फाईनैशियल कारपोरेशन, प्लाट नं० 8, ऋडीशनल न्यू मण्डी डबवाली रोड, सिरसा, ई भिमिक श्री सुभाष चन्द्र तथा उसके प्रवत्यकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्याय निर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, औद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. 9641-1-श्रम 70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ओ.(ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोइतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिणैय हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रधन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री सुभाश चन्द्र की सेवाधों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

## **दिनांक 15 मई, 1984**

सं. श्री.वि./जी.जी.एन./39-84/18906.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० राज मैटल दिल्ली रोड़, रिवाड़ी, जिला महेन्द्रगढ़, के श्रमिक श्री राजेन्द्र सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं 🕽

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिविनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रीविसूचना सं 11495-जी. श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रीविनियम की धारा 7 के श्रीवीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिणंय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवत्यकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री राजेन्द्र सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीत है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भौ.वि./जी.जी.एन./41-84/18913. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं । राज मैंटल दिल्ली रोड़, रिवाड़ी, जिला महेन्ह्गढ़ के श्रीमक श्री प्रभु दयाल तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, श्रौद्योगिक विवाद ग्रीविनियम, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियागा के राज्यशाल इसके द्वारा सरकारी ग्रीधसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साय प्रकृते हुए ग्रीविस्चना सं. 1₁495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रीविनियम की घारा 7 के ग्रीवीन गठित श्रम न्यायालय, फरोराबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत घाया सम्बन्धित मामला है:—

क्या भी प्रभु दयाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्रो.वि /गुड़गांवा/117-83/18920.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं बीनैक्स, प्लाट नं. 24, घारुहेड़ा, तहसील रिवाड़ी, जिला महेन्द्रगढ़, के श्रमिक श्री गुरनाम सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीदोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसिलए, धन, घोद्योगिक विवाद प्रिवित्यम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रिविष्टना सं. 5415-3-अम-63/ 15254, दिनोंक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए प्रधिनूचना सं० 11495-जी-अम/57/11245, दिनोंक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उन्त प्रिवित्यम की धारा 7 के प्रजीत गठित श्रम न्यायालय, फरीशबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे

लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, ओिक उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद ये सुसंगत भ्रयवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री गुरनाम सिंह की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.धी.वि./रोहतक/38-84/18927. चूंिक हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. पारले विस्कुट प्रा. लि., बहादुरगढ़ (रोहतक) के श्रमिक श्री राम किशन तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भोद्योगिक विवाद है;

मौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तिकों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पंठित सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ग्रो. (ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रधि-नियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उत्तसे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राम किशन की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तया ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हफदार है ?

सं. भी.वि./एफ.डी./37-84/18934.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० एस० जी० स्टील, प्रा. लि., प्लाट नं० 6, सैक्टर 4, बल्लबगढ़ के श्रमिक श्री दया राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाण। के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई ग्रिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पड़ते हुए ग्रिधिसूचना सं० 11495—जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाजाद, को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनणैय हेतू निविष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों सथा श्रमिक के बीच या सो विवाद प्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:——

क्या श्री दया राम को सेवाझों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हुकदार है ?

सं० भ्रो.वि./सोनीपत/47-84/18941. चूर्कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. वावा श्रायरन एण्ड स्टील वर्कस, इण्डस्ट्रीयल ऐरिया, सोनीपत के श्रमिक श्री चन्द्र बहादुर तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है ;

इस लिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं. 9641-1-श्रम। 70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ग्रो.-(ई)-श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिधिनयम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालाय रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दंष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबन्धित मामला है:-

क्या श्री चण्द्र बहादुर की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?